IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी पाठ्यक्रम में हास्य–व्यंग्य साहित्य की उपादेयता

षोधार्थी आशीष पाठक

एम.ए. हिन्दी (नेट)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

जीवाजी विष्वविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेष

षोध प्रपत्र

समकालीन व्यंग्य साहित्य में हिन्दी के मनीषी लेखकों का अप्रतिम योगदान रहा है। समाज में सकारात्मक एवं रचनात्मक परिवर्तन लाने की दृष्टि से विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्यनरत युवा पीढ़ियों को व्यंग्य साहित्य से परिचित कराना बेहद आवश्यक है। लाखों–करोड़ों छात्र–छात्राओं तक सत् साहित्य को संप्रेषित करने का जो सबसे बड़ा माध्यम हो सकता है, तो वह है हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में व्यंग्य साहित्य का समावेश। इस परिवर्तन हेतु विद्यार्थी वर्ग गंभीर विषयों के साथ–साथ हास्य व्यंग्य साहित्य का रसास्वादन करना भी चाहता है, ताकि उसे खुलकर हँसने और मुस्कुराने का अवसर मिल सके।

"शिक्षा का मूल उद्देश्य ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है, उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये ही पाठ्य पुस्तकों का निर्माण किया जाता है। भाषा एवं साहित्य की पाठ्य पुस्तकों का निर्धारण करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उनमें साहित्य की सभी विधाओं का समावेश हो सके। जैसे काव्य, कहानी, निबंध, एकांकी, नाटक तथा उपन्यास आदि। इन्हीं विधाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्रीय लक्ष्यों तथा जनतांत्रिक आदर्शो, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक चेतना तथा मानवतावाद के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है। लेखक इन्हीं लक्ष्यों को पूरा करने के लिये साहित्य का सहारा लेता है।"[1]

हास्य–व्यंग्य साहित्य में रोचकता होने के कारण यह युवा वर्ग में आकर्षण उत्पन्न करता है। विद्यार्थियों में सामाजिक संस्कृति एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिये हास्य–व्यंग्य साहित्य ही सबसे सरल और सुगम माध्यम हो सकता है। यह साहित्य पाठकों को आत्म निरीक्षण के लिये बाध्य करता है।

"पाठ्य पुस्तकों में प्रायः गंभीर विषयों की भरमार होती है। विद्यार्थी जब इन गंभीर विषयों की एकरसता से ऊब जाता है, तो ऐसे समय में सचमुच उसके रस परिवर्तन के लिये हास्य–व्यंग्य साहित्य की आवश्यकता होती है। हास्य–व्यंग्य साहित्य विद्यार्थियों के लिये शिक्षा एवं मनोरंजन का दोहरा कार्य करता है। इस साहित्य के जरिये पाठक, श्रोता एवं विद्यार्थियों में ताजगी एवं एक नई शक्ति का संचार होता है।"[2] इससे विद्यार्थियों में साहित्य अध्ययन के प्रति सुरूचि एवं रचनात्मक मानसिकता का भी निर्माण होता है। पाठ्यक्रम में यदि हास्य–व्यंग्य का पाठ न हो, तो पाठ्य पुस्तकें भार स्वरूप लगने लगती है। साथ ही पुस्तकों के प्रति अरुचि एवं विकर्षण उत्पन्न होने लगता है। अतः पाठ्य पुस्तकों को रूचिकर एवं आकर्षण का विषय बनाने में हास्य–व्यंग्य साहित्य का प्रमुख स्थान है।

पाठ्यक्रम में हास्य–व्यंग्य पढ़ते–पढ़ते विद्यार्थी धीरे–धीरे इतनी रुचि लेने लगते हैं कि वे दूसरों पर हँसना छोड़कर स्वयं अपने आप पर भी हँसना आरंभ कर देते हैं और यहीं से उनके अंदर आत्म निरीक्षण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। वह सोचने लगता है कि अपने जीवन में ऐसा कोई काम न करें, जिससे वह हँसी का पात्र बन जाये। इस प्रकार पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित हास्य व्यंग्य साहित्य विद्यार्थियों का मनोरंजन करने के साथ ही साथ उसे आत्म निरीक्षण, आत्म नियंत्रण, आत्म परीक्षण, आत्मविष्वास और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा तथा अवसर देता है।

पाठ्य पुस्तकों में कुछ पाठ ऐसे भी होते हैं, जिनमें असामाजिक व्यक्तियों, समाज में प्रचलित अंधविष्वासों एवं कुरीतियों की हँसी उड़ाई जाती है। हास्य–व्यंग्य रूपी साबुन से, समाज की विकृतियों के मैल को बड़ी सरलता से धोया जा सकता है। हास्य रूपी साबुन थोड़ा मुलायम होता है, और इससे समाज के मैल को धोना अत्यंत आसान होता है। जो काम गंभीरता से करने में कठिन होता है, वह हास्य व्यंग्य साहित्य के माध्यम से लेखक द्वारा बड़ी ही सरलता के साथ सफलता पूर्वक कर लिया जाता है। शायद इसीलिये हमारे संत कवि कबीर आज भी जन–जन के लोकप्रिय कवि हैं।

आज का युवा ही देश का भावी कर्णधार है। इसलिये यह आवश्यक है कि वह समाज की बुराइयों और विकृतियों के प्रति सजग रहे। इस तरह हास्य–व्यंग्य साहित्य सामाजिक परिवर्तन एवं सुधार के लिये एक प्रमुख साधन है।

“पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित हास्य–व्यंग्य साहित्य विद्यार्थियों के भीतर कष्ट सहने की क्षमताओं का भी विकास करता है। हास्य–व्यंग्य का बोध हो जाने से बड़े–बड़े सांसारिक कष्ट भी बौने लगने लगते हैं। सांसारिक कठिनाईयों को हँसते–हँसते झेलने की प्रवृत्ति के विकास के परिणाम स्वरूप दुःख रूपी अंधकार उनको अपने मार्ग से विचलित नहीं कर पाता। निराशा उनके पास तक फटकने नहीं पाती। आशा रूपी प्रकाश उनके जीवन को सदैव प्रकाशित करता रहता है। विषम परिस्थितियों में भी विद्यार्थी हास्य–व्यंग्य साहित्य के संपर्क में रहकर अपना मानसिक संतुलन नहीं खोता और सदैव उन्नति के मार्ग पर आगे ही आगे बढ़ता रहता है। इस प्रकार हास्य–व्यंग्य साहित्य विद्यार्थी के जीवन में सर्वांगीण विकास में अपना असीम सहयोग प्रदान करता है।’[3]

पाठ्य पुस्तकों में पाठ्यक्रम के रूप में शामिल हास्य–व्यंग्य साहित्य विद्यार्थियों के स्वभाव पर भी मनोवैज्ञानिक असर डालता है। वह विद्यार्थियों की प्रकृति में परिवर्तन ला देता है। क्रोधी विद्यार्थियों के अंदर विनम्रता का समावेश हास्य–व्यंग्य साहित्य पढ़ते–पढ़ते स्वतः ही हो जाता है। ईर्श्या, द्वेष, अहंकार और क्रोध जैसे मनोविकारों को समाप्त कर हास्य–व्यंग्य साहित्य उनके स्थान पर सद्‌गुणों की नींव रखता है।

मैकडूगल के अनुसार हँसना हमारे मन के विकारों को बाहर निकालकर हमारे मनोभावों के प्रवाह को ठीक रखता है। हास्य–व्यंग्य साहित्य की ओर आकर्षित विद्यार्थी अपनी विनोद प्रियता के कारण सबका प्रिय हो जाता है। हास्य–व्यंग्य साहित्य के अध्ययन के माध्यम से उसमें हाजिर जवाबी के मौलिक गुणों का विकास होता है और उसे अपने व्यक्तित्व के निर्माण में इससे बड़ी सहायता मिलती है। हास्य–व्यंग्य साहित्य विद्यार्थियों में कटुता एवं कुटिलता को समाप्त कर उसके स्थान पर अपनत्व, सहअस्तित्व एवं मानवीय सहृदयता के गुणों का विकास करने में सहायक होता है।

काका हाथरसी, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी आदि की व्यंग्य रचनाओं ने पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थी जगत में न केवल लोकप्रियता अर्जित की है, बल्कि नई पीढ़ी को जीवन में सही दिशा भी प्रदान की है। आजकल हमारे शिक्षण संस्थाओं में प्रचलित पाठ्यक्रम में हास्य–व्यंग्य साहित्य का पर्याप्त अभाव देखने को मिलता है।

इस अभाव के कारण विद्यार्थियों में अनावश्यक गांभीर्य एवं तनाव की भारी वृद्धि हुई है। मुक्त हास्य–विनोद एवं स्वस्थ मनोवैज्ञानिक व्यवहार के अभाव में आज स्कूल–कॉलेज में गुरु–शिष्य संबंधों में दूरियाँ बढ़ गई हैं और कटुता आती जा रही है। एक कृत्रिम, बोझिल एवं अति गंभीरता का नीरस वातावरण स्कूल, कॉलेज और विष्वविद्यालयों में ही नहीं बल्कि पूरे समाज में व्याप्त है।

हास्य व्यंग्य साहित्य न केवल हमारे मन–मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है बल्कि इसका हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव देखने को मिलता है। हास्य–व्यंग्य साहित्य मानसिक तनाव ग्रस्त विद्यार्थियों के लिये एक ऐसी औषधि है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को तनाव मुक्त किया जा सकता है।

हमारे वर्तमान जीवन की समस्याएं, चिन्ताएं, उलझनें, कठिनाईयां और तकलीफें हमारे मानसिक तनाव का मुख्य कारण हुआ करती हैं। चिकित्सा वैज्ञानिकों का मत है कि तनाव से रक्त के संचार एवं प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लगता है। लेकिन जब कोई विद्यार्थी या पाठक हास्य रस युक्त रसायन रूपी हास्य व्यंग्य साहित्य का रसास्वादन करता है तो उसके भीतर उत्पन्न गुदगुदी उसके हृदय में प्रसन्नता का संचार करती है। हास्य व्यंग्य साहित्य पढ़ने से हमारे पाचन संस्थान को संचालित करने वाले रसों (एंजाइम्स) का स्राव भी भली–भाँति होता है, जिससे विद्यार्थियों को भोजन में रुचि का समुचित विकास होने से उनकी शारीरिक मानसिक वृद्धि भी संतुलित ढंग से होती है। इस प्रकार वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से हास्य–व्यंग्य साहित्य की उपादेयता सिद्ध होती है। इस प्रकार हास्य–व्यंग्य साहित्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक है, जो कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य माना जाता है।

पाठ्य पुस्तकों में वर्णित हास्य–व्यंग्य साहित्य में साहित्यकार आलंबन के प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण अपनाते हुए, आलंबन की विकृतियों का पर्दाफाश करता है। साहित्यकार का यह दृष्टिकोण विद्यार्थी के अंदर सहानुभूति पूर्ण चेतना उत्पन्न करता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी वर्ग समाज में फैली कुरीतियों, विकृतियों एवं अंधविष्वासों के प्रति सजग होकर अराजकता फैलाने वाले लोगों की हँसी उड़ाते समय भी एक उदार दृष्टिकोण एवं सहानुभूति का सहारा लेता है।

यद्यपि आजकल हास्य एवं व्यंग्य को अलग–अलग रेखांकित किया जाता है, तथापि विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपयोगी साहित्य की दृष्टि से मिश्रित हास्य–व्यंग्य को ही स्थान प्राप्त हो सका है। हास्य में यदि संवेदना तत्व की प्रमुखता होती है तो व्यंग्य में बौद्धिक तत्व प्रधान होता है। हास्य यदि आनंदित करता है तो व्यंग्य विद्यार्थियों को सजग एवं जागरूक करता है। अतः मिश्रित हास्य व्यंग्य साहित्य का आजकल पाठ्य पुस्तकों में विशिष्ट स्थान बनता जा रहा है।

व्यंग्यकार अपने व्यंग्य रूपी शस्त्र से असामाजिक तत्वों पर प्रहार करता है। इस दृष्टि से व्यंग्य सामाजिक परिवर्तन का एक कारगर हथियार है। व्यंग्य के पाठक बनकर आज हमारे विद्यार्थी समाज की वास्तविक स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और असामाजिक तत्वों से सावधान रहने के लिये समाज को आगाह भी कर सकते हैं।

''पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य साहित्य का अभाव खलता है। स्वस्थ राजनीतिक व्यंग्य रचनाओं के बिना स्वस्थ लोकतंत्र को कायम रखना असंभव है।''[4] आज की विकृत राजनीति, आये दिन दल बदल, विचारधारा एवं सिद्धांत विहीनता, कुर्सी लिप्सा, कथनी–करनी में अंतर, राजनीतिक जनविरोधी आचरण, भ्रष्टाचार एवं राजनेताओं की अनैतिकता, राजनीति प्रेरित छात्र असंतोष, झूठे आष्वासन एवं घोषणा पत्र, राजनीति में वैमनस्य, हिंसा, गुंडागर्दी, प्रायोजित शैलियाँ, राष्ट्रीय धन की बर्बादी, राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान, आर्थिक एवं वित्तीय घोटाले, सांप्रदायिक दंगे, धार्मिक कट्टरता, राष्ट्रीय सम्पति को नष्ट करने के आंदोलन, अराजकतावादी दलीय हथकंडे, वोट बैंक के लिये ध्रुवीकरण के प्रयास और जात–पाँत के आधार पर मतदान को प्रोत्साहित करना आदि ये सभी बुराईयाँ हमारे स्वस्थ लोकतंत्र के लिये कैंसर है। इन विषयों पर प्रचुर व्यंग्य साहित्य पाठ्य पुस्तकों में शामिल किया जाना चाहिये ताकि भावी पीढ़ी चैतन्य हो सके।

''हास्य–व्यंग्य साहित्य का हमारे सामाजिक परिवेश को नैतिक दृष्टि से सुदृढ़ बनाने में विशेष महत्व है। हास्य–व्यंग्य साहित्य के जरिये विद्यार्थी अपने राष्ट्र व समाज के यथार्थ को जानकर इन परिस्थितियों से निपटने के लिये अपनी भावी भूमिका पर भी विचार कर सकता है।''[5]

हास्य–व्यंग्य साहित्य में जातिवाद, धार्मिक पाखंड, ऊँच–नीच, भेदभाव, अंधविष्वास, कट्टरता, बाहरी आडंबर आदि पर प्रचुर व्यंग्य मिलते हैं। इन विकृतियों एवं विरूपताओं की समाप्ति के लिये व्यंग्यकार अपनी आवाज बुलंद करता है। कबीर का साहित्य इसका प्रमाण है। हरिशंकर परसाई का साहित्य इसका ज्वलंत उदाहरण है। जनतंत्र एवं जन विरोधी आडंबरों एवं तर्कहीन अंधविष्वासों तथा अवैज्ञानिक विचारों का भंडाफोड़ कर व्यंग्यकार विद्यार्थियों को संकीर्णताओं एवं मानसिक (संकुचित) विचारधाराओं से सदैव दूर रहने की सलाह देता है। सर्वधर्म समभाव की दृष्टि से धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्व का विकास हमारे युवा वर्ग की आवश्यकता है, ताकि राष्ट्र को एकजुट रखा जा सके। हास्य–व्यंग्य साहित्य में रुचि लेने से विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति अनुराग बढ़ता है। वे प्रेरित होकर अपनी सुप्त साहित्यिक प्रतिमा का विकास भी करते हैं।

''मनुष्य में कई मानवीय दुर्बलताएं पाई जाती हैं। इनसे संबंधित व्यंग्य भी पाठ्य पुस्तकों में भरे पड़े रहते हैं। ये व्यंग्य विद्यार्थियों को छल, कपट, विद्वेष, झूठ–फरेब, दंभ, दर्प, लोभ, लालच, अहंकार, कंजूसी आदि मानवीय दुर्बलताओं से बचने की प्रेरणा देते हैं।''[6]

हास्य–व्यंग्य के महत्व एवं उपादेयता के संदर्भ में यदि समकालीन परिवेश को दृष्टिगत रखकर विचार करें तो पहले की अपेक्षा युवा वर्ग को हास्य–व्यंग्य साहित्य के पठन–पाठन की अधिक आवश्यकता है। यह आवश्यकता आज तीव्रता से अनुभव की जा रही है, ताकि वर्तमान युवा पीढ़ी के मन–मस्तिष्क में आज विद्यमान सामाजिक असंगतियों, विसंगतियों, राष्ट्र विरोधी राजनीतिक षडयंत्रों के प्रति एक रचनात्मक

आक्रोश उत्पन्न किया जा सके, ताकि समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में व्याप्त गत्यावरोध यथास्थितिवाद को समाप्त किया जा सके।

"हास्य–व्यंग्य साहित्य को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनकर देश की विराट जन षक्ति की आंखें खोली जा सकती हैं। ताकि कोटि–कोटि भारतीय विद्यार्थी समाज अपनी जर्जर पतनशील व्यवस्था को बदलने की अपनी क्रांतिकारी भूमिका निभा सके।"[7] निराला की 'कुकुरमुत्ता', 'धूमिल' की 'मोचीराम' कविताएं इसी ओर इशारा करती हैं। हरिशंकर परसाई की रचना 'इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर' पुलिस विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार पर कड़ा प्रहार है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हास्य–व्यंग्य साहित्य युवा पाठकों का जीवन के यथार्थ एवं मानवीय प्रश्नों से साक्षात्कार ही नहीं कराता वरन् उनके संवेदनशील मन को श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की सुरक्षा के लिए भी तैयार करता है। हास्य–व्यंग्य की फटकार अनुचित एवं अनैतिक का निषेध करती है। व्यंग्य जीवन के हर क्षेत्र की गहरी पड़ताल करता है और शोषण उत्पीड़न पर आधारित व्यवस्था पर करारी चोट करता है। डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी की व्यंग्य रचना 'चाटुकारिता भी एक कला है' आधुनिक समाज पर करारा व्यंग्य है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हास्य व्यंग्य साहित्य की उपादेयता केवल पाठ्य पुस्तकों तक ही सीमित नहीं वरन् छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये उनके समग्र जीवन में भी निर्विवाद रूप से सिद्ध होती है। किसी ने कहा भी है' 'हँसना–हँसाना कठिनाईयों के मरुस्थल में आनंददायी हरित भूमि के समान है।'

सन्दर्भ सूची

1 डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य, षब्द की नोंक पर, ग्वालियर साहित्य अकादमी, संस्करण–2017, पृश्ठ–54

2 डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य, षब्द की नोंक पर, ग्वालियर साहित्य अकादमी, संस्करण–2017, पृश्ठ–8

3 काका हाथरसी, हास्य रसम, पत्रिका, पृश्ठ–11, 12

4 डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य, षब्द की नोंक पर, ग्वालियर साहित्य अकादमी, संस्करण–2018, पृश्ठ–18

5 डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी, अभिनंदन ग्रंथ, संस्करण–1976, पृश्ठ–150

6 रामकिशन तायल, साप्ताहिक श्रम साधना (व्यंग्य विषेशांक) 5 मई 1979

7 गीतायन मासिक, सं. रामप्रकाश अनुरागी, 1978, पृश्ठ–18